MPPSC
मुख्य परीक्षा
पेपर-1, पार्ट-A

Awarded for
Result Oriented Academy
For UPSC/MPPSC-2019
by **Kamal Nath** (CM M.P.)

Awarded for
Leading E-Learning
Academy of MP-2018
by **Shivraj Singh Chouhan** (CM M.P.)

स्थापना पंजीयन क्रमांक : C/177429

शर्मा एकेडमी®

an Institute for IAS/IPS, MPPSC

MPPSC Mains Paper 1 Part-A

इकाई		**पेज नं.**
इकाई–1	**भारतीय इतिहास –** ● भारत का राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, हड़प्पा सभ्यता से 10वीं शताब्दी तक।	2–57

इकाई–2	● 11वीं से 18वीं शताब्दी तक भारत का राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (2–22)। ● मुगल शासक और उनका प्रशासन, मिश्रित संस्कृति का अभ्युद्‌य (23–51)। ● ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था एवं समाज पर प्रभाव (52–64)।	2–64

इकाई–3	● **ब्रिटिश उपनिवेश के प्रति भारतीयों की प्रतिक्रिया–** कृषक एवं आदिवासियों का विद्रोह (2–11), प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन/संग्राम (12–16)। **भारतीय पुनर्जागरण–** राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन एवं इसके नेतृत्वकर्त्ता (17–54)। ● गणतंत्र के रूप में भारत का उदय, राज्यों का पुनर्गठन, मध्यप्रदेश का गठन, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् की प्रमुख घटनाएँ (55–58)।	2–58

इकाई–4	● मध्य प्रदेश में स्वतंत्रता आंदोलन (2–29)। ● **भारतीय सांस्कृतिक विरासत (मध्यप्रदेश के विशेष संदर्भ में) –** प्राचीन काल से आधुनिक काल तक विभिन्न कला प्रारूपों, साहित्य, पर्व (उत्सव) एवं वास्तुकला के प्रमुख पक्ष (29–93)। ● मध्य प्रदेश में विश्व धरोहर स्थल एवं पर्यटन (93–102)।	2–102

इकाई–5	● मध्य प्रदेश की प्रमुख रियासतें – गोंडवाना, बुन्देली, बघेली, होल्कर, सिंधिया एवं भोपाल रियासत (प्रारंभ से स्वतंत्रता प्राप्ति तक) (2–15)। * वर्तमान मध्य प्रदेश के भौगोलिक संदर्भ में।	2–15

प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ

भारत में प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ

मानव के विकास का वर्तमान स्वरूप उसके क्रमिक विकास का परिणाम है। आरंभ में मानव ने हजारों वर्षों तक आखेटक तथा खाद्य संग्राहक के रूप में अपना जीवन व्यतीत किया। कालान्तर में वह कृषि, पशुपालन एवं स्थायी निवास करने लगा तथा खानाबदोश जीवन से मुक्त हुआ। भारत में मानव के विकास का अद्यतन साक्ष्य शिवालिक पहाड़ियों के अभिनूतन युगीन निक्षेपों से मिलते हैं। मानव के जिस रूप के साक्ष्य यहाँ प्राप्त हुए हैं, उसे रामापिथेकस के नाम से जाना जाता है। परंतु पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में आदि मानव का कोई जीवाश्म (फॉसिल) नहीं मिला है। भारत में मानव का सर्वप्रथम साक्ष्य नर्मदा घाटी के हथनौरा नामक स्थान से मिला है, जो मध्यपाषाण काल से संबंधित स्थल है। प्रागैतिहासिक काल में मानव के विभिन्न क्रिया कलापों के अध्ययन को ही प्रागैतिहासिक संस्कृति के रूप में जाना जाता है।

प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric Period)

इस काल की जानकारी का सम्पूर्ण अध्ययन पुरातात्विक स्त्रोतों पर निर्भर है। इस काल में मानव लेखन कला से अपरिचित था, इसलिए इस काल को 'प्रागैतिहासिक काल' कहते हैं। भारतीय प्रागैतिहासिक को उद्घाटित करने का श्रेय प्राइमरोज नामक एक ब्रिटिश को जाता है, जिसने 1842 ई. में कर्नाटक के रायचूर जिले के लिंगसुगुर नामक स्थान में प्रागैतिहासिक औजारों की खोज की। 1863 ई. में राबर्ट ब्रूसफूट ने पल्लवरम् (तमिलनाडु) से हैंडएक्स की खोज की।

आद्य ऐतिहासिक काल (Epochal Period)

इस काल में मानव लिपि से तो परिचित था, परंतु उस लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है, इसलिए इसे 'आद्य–ऐतिहासिक काल' कहा जाता है। हड़प्पा सभ्यता भारत के आद्य ऐतिहासिक काल से संबंधित है।

ऐतिहासिक काल (Historical Period)

इस काल में मानव लिपि से परिचित था और वह लिपि पढ़ी भी जा चुकी है, यह 'ऐतिहासिक काल' कहलाता है। यह काल ऋग्वेद काल से प्रारंभ होता है जिसका समय 1500 ई.पू. से है।

600 ई.पू. के पश्चात् का काल ऐतिहासिक कहलाता है। इसका कारण यह है कि भारत में प्राचीनतम लिखित सामग्री अशोक के अभिलेख हैं जिनका समय 300 ई.पू. है। अशोक के अभिलेखों में प्रयुक्त यूनानी, खरोष्ठी, अरामेइक और ब्राह्मी भाषाओं के विकास में 300 वर्ष और लगे होंगे ऐसा भाषाविदों का मत है इसके अतिरिक्त गौतम बुद्ध और महावीर जैन को भी ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखा जाता है।

पाषाण काल (Ston Age)

भारतीय पाषाण युग को मानव द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले पत्थर के औजारों के स्वरूप और जलवायु में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर तीन अवस्थाओं में विभाजित किया जाता है– पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल और नवपाषाण काल।

भारत में पाषाणकालीन बस्तियों के अन्वेषण की शुरूआत 1863 ई. में जियोलॉजिक सर्वे से संबंधित अधिकारी रॉबर्ट ब्रूसफूट ने की, उसे मद्रास के समीप पल्लवरम से एक पाषाण उपकरण प्राप्त हुआ। अन्ततः मार्टिमर व्हीलर के प्रयासों से भारत के समग्र प्रागैतिहासिक सांस्कृतिक अनुक्रम का ज्ञान हुआ। ए. कनिंघम को **'प्रागैतिहासिक पुरातत्व का जनक'** कहा जाता है

पुरापाषाण काल

तकनीकी विकास तथा जलवायु में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर पुरापाषाण काल को निम्न, मध्य एवं उच्च पुरापाषाण काल में विभाजित किया गया है।

निम्न पुरापाषाण काल (20 लाख, ई.पू. से 1 लाख ई.पू.)

यह पाषाण युग का प्रारंभिक चरण है। इसे ’निम्न पुरापाषाण काल’ के रूप में जाना जाता है। इस समय मनुष्य पत्थरों (क्वार्ट्जाइट) से निर्मित हथियारों (हस्तकुठार, विदारणी, खण्डक) का उपयोग करता था। जिन्हें कोर उपकरण कहा गया।

निम्न पुरापाषाण स्थल भारतीय महाद्वीप के लगभग सभी क्षेत्रों में प्राप्त होते हैं, जिनमें असम की घाटी, सोहन घाटी नर्मदा घाटी एवं बेलनघाटी प्रमुख हैं। इस काल के लाग शिकारी एवं खाद्य संग्राहक की श्रेणी में आते हैं। इस काल के उपकरण क्वार्टजाइट नामक पत्थर के बने मिले हैं। इस काल से प्राप्त उपकरणों के आधार पर भारत में दो भिन्न संस्कृतियों की पहचान की गई है–1, चॉपर–चॉपिंग पेबुल संस्कृति (सोहन संस्कृति) तथा 2. हैंड एक्स संस्कृति (मद्रासियन संस्कृति)।

मध्य पुरापाषाण काल (1 लाख ई.पू. से 40 हजार ई.पू.)

मध्य पुरापाषाण काल में शल्क उपकरणों की प्रधानता बढ़ गई तथा कच्चे माल के रूप में क्वार्ट्जाइट के स्थान पर चर्ट और जैस्पर प्रमुख हो गया। इस काल में फलकों की सहायता से बेधनी, छेदनी एवं खुरचनी जैसे उपकरण बनाए गए। फलकों की अधिकता के कारण ही मध्य पुरापाषाण काल को फलक संस्कृति भी कहा जाता है। एच डी सांकलिया ने नेवासा (गोदावरी नदी के तट पर) को प्रारूप स्थल घोषित किया है।

उच्च पुरापाषाण काल (40 हजार ई.पू. से 10 हजार ई.पू.)

उच्च पुरापाषाण काल आधुनिक मानव अर्थात् होमोसेपियन्स के अस्तित्व का युग था। इस काल में मानव उपकरणों के निर्माण में हड्डी, हाथी दाँत एवं सींगों का प्रयोग करने लगा था। नए चकमक उद्योग की स्थापना तथा होमोसेपियन्स का उदय इस काल की दो महत्वपूर्ण घटनाएं हैं।

उच्च पुरापाषाण काल के उपकरणों में तक्षणी एवं खुरचनी के उपरोक्त अस्थि के उपकरण महत्वपूर्ण थे। मानव रहने के लिए शैलाश्रयों का प्रयोग करने लगा। इस काल मे नक्काशी और चित्रकारी दोनों रूपों में कला का विकास हुआ।

मध्यपाषाण काल

हिम युग के अन्त के पश्चात् मध्यपाषाण काल का प्रारंभ माना जाता है। भारत में मध्यपाषाण काल के विषय में जानकारी सर्वप्रथम 1867 ई. में हुई जब सी एल कार्लाइल ने विंध्य क्षेत्र में लघु पाषाण उपकरण खोज निकाले।

मध्यपाषाण युगीन औजार बनाने की तकनीक को फ्रलूटिंग कहा जाता है। इस काल के कुछ सूक्ष्म औजारों का आकार ज्यामितीय है, जिसमें ब्लेड, इस काल में सैटेलाइट टूल्स (फेंककर मारे जाने वाले औजार) का प्रयोग होने लगा था। नव चन्द्राकार तथा समलम्ब औजार प्रमुख हैं।

मध्यपाषाण काल के लोग शिकार, मछली पकड़ने तथा खाद्य–संग्रहण पर निर्भर करते थे। इस काल में बाघोर (राजस्थान) तथा आदमगढ़ भीमबेटका (मध्य प्रदेश) से पशुपालन का प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त होता है। इसी काल में मानव ने सर्वप्रथम कुत्ते को पालतू पशु बनाया था।

स्थायी निवास का प्रांरभिक साक्ष्य सराय नाहर राय एवं महदहा से स्तंभ गर्त के रूप में मिलता है। सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश) से बड़ी मात्रा में हड्डी एवं सींग निर्मित उपकरण प्राप्त हुए हैं तथा महदहा से हड्डी का वाणाग्र प्राप्त हुआ है।

मध्यपाषाण काल के मनुष्यों ने अनुष्ठान के साथ शवों को दफनाने की प्रथा प्रारंभ की। मध्य भारत की विशेषता दर्शाने वाली लेखनियों से मध्यपाषाण कालीन शवों को अनुष्ठान के साथ दफनाने का साक्ष्य मिला है।

नवपाषाण काल (Neolithic Age)

नवपाषाण या नियोलिथिक शब्द का प्रयोग सबसे पहले सर जॉन लुबाक ने 1865 ई. में किया था। पुरातत्वविद् मिल्स बुरकिट के अनुसार–पशुओं को पालतू बनाना, कृषि व्यवहार का प्रथम प्रयोग, घिसे तथा पॉलिशदार पत्थर के औजार एवं मृद्भाण्डों का निर्माण नवपाषाण काल की प्रमुख विशेषता है।

पाकिस्तान के बलूचिस्तान में अवस्थित मेहरगढ़ तथा भारत के कश्मीर में स्थित बुर्जहोम एवं गुफ्कराल महत्वपूर्ण नवपाषाण कालीन स्थल हैं। बुर्जहोम में गर्त निवास का साक्ष्य मिलता है, जहाँ कब्रों में पालतू कुत्ते भी मालिकों के शवों के साथ दफनाए जाते थे।